Dr. Sangita Kumari Saha.
B.A. (H) D - I

Q. Motivation. Elements of Motivation.
अभिप्रेरणा क्या है? तथा इसके तत्वों की चर्चा करें?
अभिप्रेरण से सामान्य अर्थ वैसी अवस्था से होता है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा को एक काल्पनिक आन्तरिक प्रक्रिया के रूप में जानते हैं जो व्यवहार करने के लिए शक्ति प्रदान करता है एवं एक खास उद्देश्य की ओर व्यवहार को ले जाता है।

Witting & William (1984) के अनुसार "अभिप्रेरणा अवस्थाओं का एक खास ऐसा समुच्चय है जो व्यवहार को सक्रिय करता है, निर्देशित करता है तथा किसी लक्ष्य की ओर व्यवहार को निरन्तर ले जाता है।"
अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक आन्तरिक अवस्था है जो प्रायः काल्पनिक होती है। इससे व्यक्ति में कुछ क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं और एक निश्चित दिशा में उद्देश्य की प्राप्ति की ओर बढ़ता है। अभिप्रेरित व्यवहार उत्पन्न होने के बाद उद्देश्य की प्राप्ति तक वह जारी रहता है। मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा की व्याख्या स्पष्ट करने के लिए अभिप्रेरणात्मक चक्र का प्रतिपादन किया है।
अभिप्रेरणात्मक चक्र के तीन तत्व हैं, जो इस प्रकार हैं-
(1) आवश्यकता Need
(2) प्रणोद Drive
(3) प्रोत्साहन Incentive

(1) आवश्यकता :- जब प्राणी के शरीर में किसी चीज की कमी या अति की अवस्था किसी कारण से उत्पन्न हो जाती है तो उसे आवश्यकता की संज्ञा देते हैं। Woodworth & Schlosberg (1954) ने आवश्यकता को परिभाषित किया है कि "कमी या अति की शारीरिक अवस्था को आवश्यकता कहा जाता है।" व्यक्ति को जब प्यास लगता है तो स्पष्ट है कि उसके शरीर की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है अतः यहाँ प्यास की आवश्यकता पानी की कमी के कारण उत्पन्न हुई। इस तरह की आवश्यकता को tissue Need की संज्ञा दी जाती है।

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता को अभिप्रेरणात्मक चक्र का पहला कदम माना है क्योंकि किसी भी अभिप्रेरण की उत्पत्ति में सबसे पहले आवश्यकता ही उत्पन्न होती है।

(2) प्रणोद (Drive)

— जब प्राणी या जीव में आवश्यकता उत्पन्न होती है तो इसमें स्वभावतः उत्तेजनशीलता बढ़ जाती है और वह पहले से अधिक सक्रियतथा तनावपूर्ण मालूम पड़ता है। भूख प्यास काम आदि शारीरिक आवश्यकताओं के अलावा कुछ मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ भी व्यक्ति में होती हैं जैसे: जीवन में ऊँचा से ऊँचा उपलब्धि प्राप्त करने की आवश्यकता दूसरों पर आधिपत्य जमाने की आवश्यकता आदि। इन मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से भी मनोवैज्ञानिक प्रणोद उत्पन्न होते हैं जैसे- उपलब्धि की आवश्यकता से उपलब्धि प्रणोद तथा आधिपत्य जमाने की आवश्यकता से आधिपत्य प्रणोद की उत्पत्ति होती है।

(3) प्रोत्साहन →

अभिप्रेरणात्मक चक्र का तीसरा कदम प्रोत्साहन या लक्ष्य का होता है। लक्ष्य या प्रोत्साहन वातावरण का वह वस्तु है जो व्यक्ति या पशु को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है तथा जिसकी प्राप्ति से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति तथा प्रणोद में कमी हो जाती है। अतः किसी वस्तु को लक्ष्य या प्रोत्साहन कहलाने के लिए यह भी आवश्यक है कि वह Need से सम्बन्धित हो।

—